

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मानवता और पाप, सत्र 17, मूल पाप, साहित्यिक चोरी और आर्मिनियनवाद

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा मानवता और पाप के सिद्धांतों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 17 है, मूल पाप, साहित्यिक चोरी और आर्मिनियनवाद।

हम मूल पाप के साथ पाप के सिद्धांत पर अपना अध्ययन जारी रखते हैं, और आइए हम प्रभु से मदद मांगें।

दयालु पिता, हम आपसे इन कठिन मामलों का अध्ययन करते समय हमारी सहायता करने के लिए कहते हैं। हम आपको एक अच्छे ईश्वर होने के लिए धन्यवाद देते हैं जिन्होंने एक अच्छी दुनिया बनाई। हम इसमें पाप और मृत्यु के घुसपैठ को पूरी तरह से नहीं समझते हैं, लेकिन हम जानते हैं कि ये वास्तविकताएं हैं। हमें आशीर्वाद दें क्योंकि हम अपने जीवन में भी पाप की उत्पत्ति को समझने की कोशिश करते हैं। हम अपने प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से आपकी स्तुति करते हैं। आमीन।

रोमियों 5:12 से 21 को पाप पर शास्त्रीय पाठ माना जाता है। इसलिए, जिस तरह एक आदमी, आदम, के ज़रिए पाप दुनिया में आया और पाप के ज़रिए मौत आई, और इस तरह मौत सभी इंसानों में फैल गई क्योंकि सभी ने पाप किया, मेरी आवाज़ ऊँची है क्योंकि पॉल ने बिना तब-वाक्य के एक अगर-वाक्य दिया है। वह तुलना पूरी नहीं करता।

उनका मन इस बात पर जाता है कि आदम के पाप ने, जिसने दुनिया में पाप और मृत्यु को जन्म दिया, मानवजाति को कैसे प्रभावित किया। वह कहते हैं, क्योंकि, आयत 13, व्यवस्था दिए जाने से पहले भी पाप दुनिया में था। अगली आयत से, हम जानते हैं कि इसका मतलब मूसा की व्यवस्था है।

लेकिन जहाँ कोई कानून नहीं है, वहाँ पाप की गणना नहीं की जाती। हमने इसके पाँच दृष्टिकोण देखे, जो कि बहुत कठिन निर्माण था। मेरी समझ से पाप कानून में था, दुनिया में था, कानून दिए जाने से पहले।

लेकिन पाप को वहाँ नहीं गिना जाता जहाँ कोई कानून नहीं है, जैसा कि वहाँ गिना जाता है जहाँ कानून है क्योंकि कानून पाप को स्पष्ट, अलग और दोष देने योग्य बनाता है। फिर भी, आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु ने उन लोगों पर भी राज किया, जिनका पाप आदम के अपराध जैसा नहीं था। आदम के पाप और सिनाई पर्वत पर कानून दिए जाने के बाद इस्राएलियों के पाप के बीच समानता है क्योंकि परमेश्वर ने बगीचे में निषेध दिया था।

तुम बगीचे के हर पेड़ से खा सकते हो, सिवाय अच्छे और बुरे के ज्ञान के पेड़ के। जिस दिन तुम इसका फल खाओगे, तुम मर जाओगे, यह एक स्पष्ट निषेध है। ईडन से लेकर सिनाई तक, सिनाई के बाद तक ऐसा कुछ भी नहीं था।

ओह, मेरे शब्द। आठ तुम नहीं करोगे और दो तुम करोगे। यह वैसा ही है जैसा हर कोई करता है।

लेकिन जाहिर है, 13 और 14 के बीच, इसमें कोई संदेह नहीं है कि वे 12 को और अधिक स्पष्ट करते हैं क्योंकि इसके लिए शब्द 13 से शुरू होता है। वे कैसे समझाते हैं, इस पर बहस होती है। लेकिन पॉल खुद कहते हैं कि उस समय के बीच के लोगों ने उसी तरह पाप नहीं किया जैसे आदम ने परमेश्वर की एक निश्चित आज्ञा को तोड़कर किया था।

विशेष रूप से, एक नकारात्मक आदेश, एक निषेध। आप, हम उस अवधि में पाप की उपस्थिति के लिए जिम्मेदार ठहरा सकते हैं। हालाँकि, पौलुस ने आदम के पाप के लिए जो स्पष्ट रूप से जिम्मेदार ठहराया है, वह वास्तव में पाप की उपस्थिति नहीं है क्योंकि पाप की मजदूरी मृत्यु है।

यही इसका कारण है। लेकिन यह पाप का प्रभुत्व है, पाप और मृत्यु का राज्य है। बहुत महत्वपूर्ण बात यह है कि 14 के अंत में, हम पढ़ते हैं कि आदम उस व्यक्ति का प्रतीक था जो आने वाला था।

आदम मसीह का एक प्रकार है। यह पौलुस द्वारा पद 12 से अधूरे सशर्त खंड को पूरा करने की कुंजी है, जिसे वह केवल पद 18 और 19 में पूरा करता है। जैसे ही वह कहता है कि आदम और मसीह समान हैं, आदम मसीह का एक पुराने नियम का पूर्वरूप है।

मेरी समझ से, उसे तुरंत लगता है कि उसे उनके बीच दूरी बनानी चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि वह यीशु की प्रतिष्ठा को धूमिल कर दे। क्योंकि अगले तीन पद, 15, 16, और 17, यह नहीं दिखाते कि वे कैसे समान हैं, बल्कि वे कैसे भिन्न हैं। 15, लेकिन धार्मिकता और अनन्त जीवन का मुफ्त उपहार आदम के अपराध की तरह नहीं है।

क्योंकि यदि एक मनुष्य के अपराध से बहुत लोग मरे, तो आदम के अपराध से परमेश्वर का अनुग्रह और भी अधिक हुआ, और उस एक मनुष्य, अर्थात् यीशु मसीह के अनुग्रह से जो वरदान मिला, वह बहुतों को मिला। 16 फिर से दिखाता है कि आदम और मसीह और उनके परिणाम एक जैसे नहीं हैं। मुफ्त वरदान एक मनुष्य के पाप का परिणाम नहीं है।

क्योंकि अदन की वाटिका में आदम के एक अपराध के बाद न्याय ने दण्ड लाया। लेकिन कई अपराधों के बाद मुफ्त उपहार, वह आदम के एक पाप को अलग करता है, जो सभी के लिए दण्ड लाता है, कई पापों के साथ जिनके लिए मसीह ने प्रायश्चित्त किया। समानता पूर्ण नहीं है क्योंकि एक पाप और कई पाप अपने खंडों में अलग-अलग तरीके से काम करते हैं, लेकिन यह स्पष्ट रूप से एक और कई की तुलना है।

लेकिन बहुत से अपराधों के बाद मुफ्त उपहार ने औचित्य प्रदान किया। यदि एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक मनुष्य के द्वारा राज्य किया, तो एक मनुष्य, यीशु मसीह के

द्वारा अनुग्रह की बहुतायत और जीवन में धार्मिकता का मुफ्त उपहार और भी अधिक प्राप्त होगा। यह फिर से दिखाता है कि आदम और मसीह भिन्न हैं।

इस बार उन्होंने जो शासन स्थापित किया है, उसमें आदम ने पाप का शासन लाया और यहाँ विशेष रूप से, मृत्यु। आदम ने शासन लाया, मसीह, क्षमा करें, दूसरे और अंतिम आदम मसीह ने जीवन का शासन लाया, लेकिन यह नहीं कहा गया है कि जीवन शासन करता है।

इसमें कहा गया है कि जो लोग मसीह में विश्वास करते हैं, वे राज्य करते हैं। जो लोग अनुग्रह की प्रचुरता और धार्मिकता का मुफ्त उपहार प्राप्त करते हैं, वे एक व्यक्ति, यीशु मसीह के द्वारा जीवन में राज्य करते हैं। यह श्लोक एक और कारण से महत्वपूर्ण है।

यह अंश पूरी तरह से वस्तुनिष्ठ है, सिवाय पहले 17 के दूसरे भाग के। आपका क्या मतलब है? पूरा अंश दो आदम और उनके कर्मों और उनसे होने वाले परिणामों के बारे में बात करता है। लेकिन यहाँ, केवल एक बार यह व्यक्तिपरकता की बात करता है, यह कहता है कि जो लोग अनुग्रह और औचित्य की प्रचुरता, धार्मिकता का मुफ्त उपहार प्राप्त करते हैं, वे राज्य करेंगे।

तो, यहाँ एक बार फिर से विचार का प्रवाह है। पद 12 में, पॉल तुलना शुरू करता है और इसे समाप्त नहीं करता है। किसी तरह, पद 13 और 14, इस तथ्य को आगे बढ़ाते हैं कि आदम के पाप ने दूसरों, यानी मानव जाति को प्रभावित किया।

14 के अंत में कहा गया है कि आदम मसीह का एक प्रकार है। और यही आयत 12 से अधूरे तुलनात्मक खंड को पूरा करने की कुंजी है। हालाँकि, पौलुस तुरंत आदम और मसीह के बीच समानता पर ध्यान केंद्रित नहीं करता है, लेकिन वह उनके बीच एक दूरी बनाने की आवश्यकता महसूस करता है।

इसलिए, 15, 16 और 17 में, वह कहता है कि वे एक जैसे नहीं हैं। 18 में, वह 12 की थीसिस पर लौटता है और इस बार तुलना समाप्त करता है। इसलिए, जैसे एक अपराध सभी लोगों के लिए निंदा का कारण बना, वैसे ही धार्मिकता का एक कार्य सभी लोगों के लिए औचित्य और जीवन का कारण बना।

19 में इस विचार को कुछ शब्दावली और कल्पना के साथ दोहराया गया है, क्योंकि एक व्यक्ति की अवज्ञा से, बहुत से लोग पापी बन गए। इसलिए, एक व्यक्ति की आज्ञाकारिता से, बहुत से लोग धर्मी बन जाएंगे। यहाँ हम पौलुस को 12 से अपने अधूरे निष्कर्ष को पूरा करते हुए पाते हैं।

एक अपराध के परिणामस्वरूप मानव जाति की निंदा हुई। धार्मिकता का एक कार्य, क्रूस पर मसीह की मृत्यु का संदर्भ, औचित्य की ओर ले जाता है। और बहीखाता असंतुलित है।

अगर उसने सिर्फ औचित्य कहा होता, तो वह निंदा के साथ संतुलित होता, लेकिन वह सभी मनुष्यों के लिए औचित्य और जीवन कहकर इसे इस तरह से झुकाता है। तथ्य यह है कि वह सभी मनुष्यों को दो बार कहता है, यह एक समस्या है, और हम बहुत जल्द वापस लौटेंगे क्योंकि

अगली आयत में कई लोगों को दो बार कहा गया है। क्योंकि एक आदमी की अवज्ञा के कारण, आदम की वाटिका में, कई लोग पापी बन गए।

तो, एक व्यक्ति की आज्ञाकारिता से, यीशु की मृत्यु तक आज्ञाकारिता, फिलिप्पियों 2, यहाँ तक कि क्रूस की मृत्यु तक। तो, एक व्यक्ति की आज्ञाकारिता से, बहुत से लोग धर्मी बनाए जाएँगे। हम इन सब के साथ क्या करते हैं, 18 में सभी, 19 में बहुत से, बहुत से? हम उनमें से किसी को भी पूर्ण नहीं करते हैं।

हम चुन-चुनकर नहीं ले सकते। हम अपना केक भी नहीं खा सकते और न ही रख सकते। उदाहरण के लिए, अगर हम कहें, इसे देखो।

आदम के अपराध ने सभी मनुष्यों को दण्डित किया। 18 और 19 में यही कहा गया है। मसीह की आज्ञाकारिता से, बहुत से लोग धर्मी ठहराए जाएँगे।

यह हमारे धर्मशास्त्र के साथ बहुत अच्छी तरह से मेल खाता है, और पॉल इसका खंडन नहीं कर रहा है, लेकिन वह ऐसा नहीं कर रहा है। अगर हम उन्हें इस तरह से पढ़ते हैं, तो मैं आपको बताऊंगा कि सार्वभौमिकवादी 18 को कैसे पढ़ते हैं, जो उनके पसंदीदा प्रमाण ग्रंथों में से एक है। धार्मिकता के एक कार्य से, सभी मनुष्य न्यायसंगत हो जाएंगे।

वे यही कहते हैं। यही इसमें लिखा है। और मैं ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जानता जो यह कहता हो।

19 में, आदम के पाप के कारण, केवल बहुत से लोग पापी बनाए गए थे। क्या आपका मतलब है कि कुछ मनुष्य पतन से कलंकित नहीं हैं? ओह। तो, यहाँ सौदा है।

पॉल दो आयतों में खुद का विरोध नहीं कर रहा है। जब वह सब कहता है तो वह विरोधाभास नहीं कर रहा है। यह सब बहुतों के खिलाफ नहीं है।

और जब वह कहता है कि बहुत से, तो वह खुद को सही नहीं कर रहा है। यह बहुत से नहीं बल्कि सभी के विपरीत है। प्रत्येक मामले में, यह एक आदमी, आदम, और उसके सभी लोग हैं।

दूसरा है आदम मसीह और उसके सभी लोग। आदम और उसके बहुत से लोग ही उसके लोग हैं। मसीह और उसके बहुत से लोग ही उसके लोग हैं।

यानी, यह दो आदमों की तुलना करता है और सुंदर शब्दों और सुंदर गद्य के साथ उनके एक ही कार्य के विनाशकारी प्रभावों को प्रदर्शित करता है। हव्वा ने पहले पाप किया। मूल पाप हव्वा से नहीं आया।

मसीह ने कई अद्भुत काम किए, जिनमें मृतकों में से जी उठना भी शामिल है। लेकिन यह उनकी धार्मिकता के एक कार्य, आज्ञाकारिता के एक कार्य पर केंद्रित है, जिसके बारे में सभी टिप्पणीकार सहमत हैं कि यह क्रूस पर उनकी मृत्यु की बात करता है। बेशक, उनका पुनरुत्थान बचाता है, और यह निहित होना चाहिए।

लेकिन यह उन शब्दों का केंद्रबिंदु नहीं है। एक और बात जो कहनी है वह यह है कि हम आम तौर पर औचित्य को वर्तमान के रूप में सोचते हैं, और वास्तव में यह है, लेकिन इसके सबसे तकनीकी और उचित अर्थ में, उद्धार के हर दूसरे पहलू की तरह, यह अंतिम दिन से संबंधित है। हम इसे यहाँ पाते हैं।

इसलिए, एक व्यक्ति की आज्ञाकारिता से, बहुत से लोग धर्मी ठहराए जाएँगे। गलातियों 6 में धार्मिकता का एक संदर्भ है जो इसी पैटर्न पर फिट बैठता है। गलातियों और सुसमाचार में यीशु के शब्दों पर डग मूर की टिप्पणी देखें जो कहती है, आपके शब्दों से, आपको दोषी ठहराया जाएगा; आपके शब्दों से, आपको उचित ठहराया जाएगा।

न्यायोचित, दोषमुक्त, दोषमुक्त, यह सब एक ही बात है। और उस संदर्भ में, अंतिम दिन, निंदा, औचित्य, यह भविष्य के औचित्य की बात कर रहा है। तो, क्या हम अभी न्यायोचित हैं या नहीं? हाँ, हम हैं।

लेकिन यहाँ इसका अद्भुत हिस्सा है। जैसा कि यूहन्ना 3:16, 17, और 18 में दिखाया गया है, बिना किसी शब्द का उपयोग किए, परमेश्वर ने अपने पुत्र को संसार में इसलिए नहीं भेजा कि वह संसार को दोषी ठहराए, बल्कि इसलिए कि वह उसके द्वारा संसार को बचाए। जो कोई विश्वास नहीं करता, वह पहले ही दोषी ठहराया जा चुका है।

जो कोई विश्वास करता है, वह दोषी नहीं ठहराया जाता। जो कोई परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करता है, वह दोषी नहीं ठहराया जाता। जो कोई विश्वास नहीं करता, वह पहले ही दोषी ठहराया जा चुका है।

सुसमाचार में अंतिम दिन के फैसले स्पष्ट रूप से बताए गए हैं। और अगर हम प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, तो परमेश्वर ने हमें अंतिम दिन के फैसले की संभावना में अभी धर्मी घोषित कर दिया है। यह बहुत ही संक्षिप्त सारांश है, श्लोक 19 तक।

20 अब व्यवस्था ने अपराध को बढ़ाया। कभी-कभी पौलुस व्यवस्था को पाप को बढ़ाने वाला बताता है। लेकिन जहाँ पाप बढ़ा, वहाँ अनुग्रह और भी अधिक हुआ।

पाप और अनुग्रह के बीच अंतर, और उनकी वृद्धि, ताकि जैसे पाप ने मृत्यु में राज्य किया, फिर से वही विचार है, अनुग्रह भी धार्मिकता के माध्यम से राज्य कर सकता है, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से अनन्त जीवन की ओर ले जाता है। यह चार्ट जिसे हमने पिछली बार पेश किया था, मैं बस उस व्याख्या को संक्षेप में प्रस्तुत करना चाहता था क्योंकि यह जटिल है, और आप वास्तव में आसानी से भ्रमित हो सकते हैं। चार्ट रोमियों 5:12 से 21 तक आदम मसीह के अंतर की तुलना करता है।

सबसे बाईं ओर दो आदम हैं, और ऊपर दिए गए शीर्षक उनके कार्य हैं, उनके संबंधित कार्य। उनके कार्यों के संबंध में परमेश्वर का निर्णय और उनके एकल कार्यों पर परमेश्वर के निर्णय के

घोषित होने से प्राप्त परिणाम। पौलुस आदम के कार्य के लिए तीन अलग-अलग शब्दों का उपयोग करता है।

वह इसे पाप, अतिचार या अपराध कहता है। ऐसा लगता है कि ये दोनों समानार्थी हैं; अनुवाद अलग-अलग हैं, लेकिन ये समानार्थी हैं। पाप, अतिचार और अवज्ञा।

मैं पाप को सारांश के रूप में इस्तेमाल करता हूँ। आदम ने ईडन गार्डन में पाप किया था, हव्वा ने नहीं। आदम सिर है, और वह सिर नहीं है।

आदम ने ईडन गार्डन में जो पाप किया, वह मूल पाप है। न केवल पहला पाप, जो हव्वा के वर्तमान पाप को अनदेखा करता है, बल्कि वह पाप जो बाकी सभी मानवजाति को जन्म देता है, यीशु ने कुंवारी गर्भाधान के कारण स्वीकार किया, पापी पैदा हुए, और परिणामस्वरूप पाप किया, और उन सभी तरीकों से वर्णित किया गया, जैसा कि जॉन महोनी के निबंध में किया गया था, जहाँ तक पाप क्या है। पाप की गड़बड़ी, उलझन, जघन्यता पहले आदमी से आती है।

आदम के पाप के बारे में न्यायी और पवित्र परमेश्वर का क्या फैसला है? इसमें कोई सवाल नहीं है। केवल एक ही फैसला है। दोषी, निंदित, निंदनीय, निंदा एक अच्छा धर्मशास्त्रीय शब्द है।

इसके अलावा कोई और फैसला संभव नहीं है। भगवान खुद को नकार देंगे अगर वह दूसरी तरफ़ देखें या कहें, ठीक है, लड़के तो लड़के ही होते हैं। वह ऐसा नहीं कर सकते।

और इसका परिणाम, इस अनुच्छेद में लगातार, मृत्यु है। भौतिक शास्त्र में आध्यात्मिक मृत्यु भी शामिल होगी: मृत्यु और उसके विभिन्न परिणाम।

मसीह दूसरा मनुष्य है, 1 कुरिन्थियों 15, दूसरा मनुष्य, अंतिम आदम। धर्मशास्त्री इन विचारों के बारे में बात करने के लिए दूसरे आदम की शब्दावली का उपयोग करते हैं। वह केवल दूसरा मनुष्य है जिसे सही बनाया गया है, और वह अपने लोगों की एक जाति, छुड़ाए गए लोगों की जाति का मुखिया है।

आदम मानव जाति का स्वाभाविक मुखिया है, इसमें कोई संदेह नहीं है। मैं यह पता लगाने की कोशिश करने जा रहा हूँ कि मूल पाप के संदर्भ में वह किस तरह मानव जाति का मुखिया है। इस व्याख्यान में और संभवतः अगले व्याख्यान में भी यही हमारा कार्य है।

आदम के पाप, अवज्ञा और अपराध के अनुरूप मसीह के कार्य को धार्मिकता कहा जाता है। एक मनुष्य की आज्ञाकारिता के माध्यम से धार्मिकता का एक कार्य, पद 19: धार्मिकता और आज्ञाकारिता।

यह शायद सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है क्योंकि यह अंश वास्तव में औचित्य के बारे में है। यीशु की मृत्यु तक आज्ञाकारिता, यहाँ तक कि क्रूस की मृत्यु, यीशु के क्रूस पर चढ़ने में धार्मिकता के एक कार्य के प्रकाश में, एक पवित्र और न्यायी परमेश्वर को क्या निर्णय देना चाहिए? इसमें कोई सवाल

नहीं है। मैं श्रद्धापूर्वक कहता हूँ कि एक पवित्र और न्यायी परमेश्वर को यीशु में विश्वास करने वाले हर व्यक्ति को धार्मिक घोषित करना चाहिए।

यहाँ सुधार का सुसमाचार है। यहाँ उद्धार का आश्वासन है। क्या आप मुझे यह बताना चाहते हैं कि कोई गंदा पापी, हत्यारा, जो यीशु में विश्वास करता है, उसे परमेश्वर को धर्मी घोषित करना चाहिए? मेरा यही मतलब है। अन्यथा, पिता खुद को नकार देगा और अपने बेटे के काम का सम्मान नहीं करेगा।

इसमें कोई संदेह नहीं है। जैसे परमेश्वर को आदम के पाप की निंदा करनी चाहिए, वैसे ही, मैं श्रद्धापूर्वक कहता हूँ, परमेश्वर पर कोई बाहरी दबाव या कानून नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर पवित्र और न्यायी है।

ऐसा इसलिए है क्योंकि वह परमेश्वर है। और वह अपने बेटे के काम का सम्मान करता है, जिसकी उसने योजना बनाई थी और उसे पूरा करने के लिए दुनिया में भेजा था। और हम पवित्र आत्मा को बाहर नहीं छोड़ना चाहते।

इब्रानियों का कहना है कि मसीह ने खुद को अनंत आत्मा के माध्यम से परमेश्वर को अर्पित कर दिया। त्रिकत्व को हर उस पापी के लिए धर्मी घोषित किया जाना चाहिए जो क्रूस की ओर देखता है और यीशु पर विश्वास करता है। परिणाम? बेशक, अनंत जीवन।

वह छोटा सा चार्ट मूल पाप के सिद्धांत के बारे में बहुत कुछ बताता है। मूल पाप के बारे में विचारों को देखने से पहले, मैं चाहता हूँ कि हम शानदार और ईश्वरीय इंजीलवादी एंग्लिकन गेराल्ड ब्रे की मदद से थोड़ी ऐतिहासिक धार्मिक पृष्ठभूमि प्राप्त करें।

उन्हें व्यक्तिगत रूप से जानना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। वह ईश्वर के कितने बड़े आदमी थे। एक अविवाहित व्यक्ति जो अपने समय का सदुपयोग करता है।

खैर, वह एक प्रतिभाशाली व्यक्ति भी है, और यह मदद करता है। मैं उसकी किताबों की गिनती नहीं कर सकता। अरे यार।

ऐतिहासिक धर्मशास्त्र में पाप पर एक अध्याय में उनका एक खंड है। इस अद्भुत पुस्तक में जिसका नाम है फॉलन, ए थियोलॉजी ऑफ़ सिन। मैं मज़ाकिया अंदाज़ में कह रहा हूँ क्योंकि मैंने क्रिस्टोफर मॉर्गन के साथ मिलकर इस पुस्तक का सह-संपादन किया है।

सृष्टिकर्ता के आदेश में पाप। इसलिए, यह जानकर कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि प्रारंभिक चर्च में सबसे अधिक बार जिस बाइबिल मार्ग पर टिप्पणी की गई थी, वह उत्पत्ति 1-3 था। जो मानवजाति के निर्माण, पतन, पाप और पतन का विवरण है।

वस्तुतः प्रत्येक चर्च के पादरी ने इस आधारभूत पाठ पर विस्तार से लिखा है। और कुछ ने तो एक से अधिक बार ऐसा किया है। हिप्पो के ऑगस्टीन, सेंट ऑगस्टीन, जिन्होंने बाइबल पर बहुत अधिक टिप्पणियाँ नहीं लिखीं।

भजन संहिता और जॉन, पहाड़ी उपदेश। फिर भी, इस विषय पर कम से कम चार ग्रंथ लिखे गए। जो हमें इस बात का अच्छा संकेत देता है कि यह उनके लिए कितना महत्वपूर्ण था।

उन्होंने मनीचियन के खिलाफ दो किताबें लिखीं, जो कि वह धार्मिक दर्शन के पूर्व पंथ थे, उत्पत्ति के शाब्दिक अर्थ पर एक अधूरी टिप्पणी, उनके कन्फेशन की अंतिम पुस्तकें, और उत्पत्ति पर शाब्दिक टिप्पणी की बारह पुस्तकें, जो 401 और 403 के बीच लिखी गईं, बस इस पर किसी तरह की तारीख डालने के लिए। ये इस मामले पर उनके अंतिम लेखन हैं। उनके स्पष्ट मतभेदों के बावजूद, इन ग्रंथों का सामान्य प्रवाह एक ही है।

ऑगस्टीन कहते हैं कि सृष्टि अच्छी है, पाप उस मूल अच्छाई का भ्रष्टाचार या विकृति है, और एक बार पाप हो जाने के बाद, ईश्वरीय हस्तक्षेप के अलावा इससे छुटकारा पाने का कोई तरीका नहीं है। हालाँकि, हम इसके लिए चाहे कितने भी दुखी क्यों न हों, हम इसे सही करने की कितनी भी कोशिश क्यों न करें, हम चाहे कितने भी पाप रहित होने की इच्छा क्यों न करें, यह सब ईश्वर की कृपा के बिना संभव नहीं है जो हमें उनके पुत्र, यीशु मसीह के रूप में मुफ्त में दी गई है। केवल इस दुनिया की शक्तियों के लिए आध्यात्मिक रूप से मरने और मसीह में फिर से जन्म लेने से ही एक इंसान इस जीवन में, अपने जीवन में पाप की शक्ति पर विजय प्राप्त कर सकता है, और ईश्वर के राज्य को प्राप्त करने की आशा कर सकता है।

जैसा कि चर्च के पिताओं ने समझा था, पाप एक ऐसी स्थिति है जो हमें अपने पहले माता-पिता, आदम और हव्वा से विरासत में मिली है, जिन्होंने ईडन गार्डन में ईश्वर की अवज्ञा की और इस कारण से उन्हें वहाँ से निकाल दिया गया। लेकिन अगर उनका पाप उनकी अपनी गलती थी, तो यह उनका अपना विचार नहीं था। पहले मनुष्यों के पाप से ऊपर और परे एक दुष्ट शक्ति थी जिसने उन्हें प्रलोभन द्वारा इसमें फंसाया था।

यह शक्ति शैतान और उसके स्वर्गदूतों में व्यक्त की गई थी, जिन्होंने दुनिया के निर्माण से पहले किसी समय परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया था। परमेश्वर ने उन्हें तुरंत नष्ट क्यों नहीं किया और शैतान को अपने विद्रोह में मानवजाति को अपने पीछे चलने के लिए क्यों लुभाने दिया, ये ऐसे रहस्य थे जिन्हें कोई भी नहीं सुलझा सका, हालाँकि यह स्पष्ट था कि वे मानव अनुभव के अनुरूप थे। इसलिए, पाप से शुद्ध होना शैतान, बुराई के राजकुमार के साथ आध्यात्मिक युद्ध में प्रवेश करना था, जो हमें अपने राज्य में वापस लाने के लिए अपनी शक्ति में सब कुछ करना जारी रखता है।

अंत में, शैतान का नाश हो जाएगा, लेकिन जब तक वह नष्ट नहीं हो जाता, बुराई एक वास्तविकता होगी जिसके साथ हमें संघर्ष करना होगा और जिसके खिलाफ हमें सुरक्षा करनी होगी। यह इस बात को अपरिहार्य नहीं बनाता कि एक ईसाई पाप करेगा, लेकिन यह एक अनुस्मारक है कि हमारा जन्मजात पाप इस तथ्य से आता है कि हम शैतान के राज्य में पैदा हुए हैं और यह पाप हमें शैतान के प्रलोभनों में निहित खतरों के सामने उजागर करता रहता है। भले ही हम पाप की शक्ति से मुक्त हो गए हों, लेकिन हमारे प्राकृतिक झुकाव इसे हमारे लिए आकर्षक

बनाते रहते हैं और एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करते हैं कि हम मसीह की बचाने वाली शक्ति के बिना नहीं कर सकते।

वह एक स्पष्ट लेखक है, है न? हमारे द्वारा किए जाने वाले पापपूर्ण कार्यों के विपरीत पाप वास्तव में क्या है? पाप को सीमितता और सीमितता के साथ समान करने की बुतपरस्त ग्रीक प्रवृत्ति का अनुसरण करते हुए, कई चर्च के पिताओं ने इसे हमारे मानवीय संविधान में निहित एक कमजोरी के रूप में सोचा। उनके दिमाग में, बुराई एक कमी, अनुपस्थिति या अच्छाई का अभाव था जो ईश्वर से हमारे अलगाव का स्वाभाविक परिणाम है। वे तर्क देते हैं कि चूंकि ईश्वर सर्वोच्च अच्छाई है, इसलिए उससे अलग होना उस अच्छाई को खोना है।

इसका परिणाम पाप है, या अधिक सटीक रूप से कहें तो पापमयता की स्थिति है। बुरे विचार और कर्म, या जिन्हें हम वास्तविक पाप कहेंगे, वे परमेश्वर से इस अलगाव का अपरिहार्य परिणाम हैं और जितना हो सके उससे और उसकी अच्छाई से दूर जाने की हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति को बढ़ावा देते हैं। जो लोग परमेश्वर की इच्छा के आगे झुकने से इनकार करते हैं, वे आत्म-विनाश पर तुले हुए हैं और इसके कारण नष्ट हो जाएंगे।

यह विनाश पूर्ण विनाश है या शाश्वत दंड, यह बात पितरों को कम स्पष्ट थी, लेकिन इस मामले पर चर्चा करने वाले कुछ लोगों ने शाश्वत दंड को प्राथमिकता दी क्योंकि यह ईश्वर की प्रकृति के साथ अधिक सुसंगत था। इसका कारण यह था कि ईश्वर अपने द्वारा बनाए गए किसी भी चीज़ से घृणा नहीं करता है और इसलिए, वह सबसे विद्रोही प्राणियों को भी अस्तित्व में बनाए रखेगा, उन्हें अस्तित्व में बनाए रखेगा क्योंकि वह उन्हें अपने प्राणियों में से एक के रूप में प्यार करता है। लेकिन ऐसी आत्माओं को अस्तित्व में बनाए रखना उन्हें आत्म-विनाश की उनकी इच्छा को प्राप्त करने से भी रोकता है, जिसे इसलिए उन आत्माओं द्वारा पीड़ा के रूप में महसूस किया जाता है।

ईश्वर हमेशा अपनी सृष्टि के प्रति दयालु और प्रेमपूर्ण रहता है, लेकिन जो लोग उसकी अवज्ञा करके अंधे हो गए हैं, वे इसकी सराहना नहीं करते और अपने पापों के लिए दंड के रूप में उसके प्रेम का अनुभव करते हैं। मुझे नहीं पता कि मैं इसे ठीक वैसा ही कहूंगा जैसा उसने कहा है। मैं उसे एंग्लिकन चर्च में शाश्वत दंड को मानने का श्रेय देता हूँ, जहां उदारवादी भी सार्वभौमिकता सिखाते हैं, और ब्रे ने मुझे बताया है कि इंजीलवादी विनाशवाद या शाश्वत दंड के लिए लड़ते हैं।

अमेरिकी स्थिति अलग है। कोई व्यक्ति पादरी नहीं बन सकता; आप चर्च के सदस्य हो सकते हैं, लेकिन दक्षिणी बैपटिस्ट कन्वेंशन, इवेंजेलिकल फ्री चर्च या प्रेस्बिटेरियन चर्च इन अमेरिका में अच्छे दर्जे के पादरी नहीं हो सकते। यदि आप खोए हुए लोगों के लिए अनंत सचेत दंड, नरक के ऐतिहासिक सिद्धांत को नहीं मानते।

मैं इस मामले में डॉ. ब्रे से ज़्यादा मज़बूत हूँ, जिनके लिए मेरे मन में बहुत सम्मान है। वे अपने लेखन के ज़रिए मेरे शिक्षक हैं। जैसा कि प्रेरित पौलुस ने कुरिन्थियों के हवाले से कहा, प्राकृतिक व्यक्ति परमेश्वर की आत्मा की बातों को नहीं समझता, 1 कुरिन्थियों 2:14।

यह विचार कि पाप मूलतः अच्छाई की कमी या वंचना है, प्रारंभिक चर्च में आम था और पूर्व में भी यह प्रमुख दृष्टिकोण बना रहा। पूर्वी रूढ़िवादी दृष्टिकोण का एक प्रमुख तत्व यह है कि आदम के

पाप ने दुनिया में मृत्यु ला दी, और यह उनकी मृत्यु दर के कारण ही है कि उसके सभी वंशजों ने पाप किया है। वे इसे रोमियों 5:12 की अपनी व्याख्या पर आधारित करते हैं, जिसे वे इस प्रकार पढ़ते हैं, उद्धरण, पाप एक मनुष्य के माध्यम से दुनिया में आया और पाप के माध्यम से मृत्यु।

और इसलिए मृत्यु सभी मनुष्यों में फैल गई क्योंकि सभी ने पाप किया। इस अनुवाद की शुद्धता अस्पष्ट ग्रीक वाक्यांश के अर्थ पर निर्भर करती है, जिसका अनुवाद पूर्व में चर्चों में किस कारण से किया जाता है, लेकिन पश्चिम में अधिकांश लोग इसका अनुवाद इसलिए करते हैं। सैद्धांतिक रूप से दोनों में से कोई भी अर्थ संभव है, और इसलिए, उनमें से कौन सा बेहतर है, यह अन्य मानदंडों द्वारा निर्धारित किया जाना चाहिए।

उदाहरण के लिए, क्या हम कह सकते हैं कि आदम पाप में गिरने से पहले अमर था और पाप ने दुनिया में नश्वरता ला दी? हर कोई इस बात से सहमत है कि आदम अपने पाप के परिणामस्वरूप मर गया, लेकिन यह कहने जैसा नहीं है कि पाप के कारण उसने अपनी मूल अमरता खो दी। आखिरकार, शैतान अमर था, लेकिन उसने पाप करने पर वह गुण नहीं खोया। दूसरी ओर, मनुष्य यीशु मसीह नश्वर था, लेकिन इसने उसे पाप रहित होने से नहीं रोका।

इसलिए, पाप और मृत्यु के बीच का संबंध पूर्वी रूढ़िवादी चर्चों की तुलना में अधिक जटिल प्रतीत होता है, या कम से कम प्रतिनिधि धर्मशास्त्रियों ने जो स्वीकार किया है। आदम को अमर प्राणी के रूप में नहीं बनाया गया था, लेकिन ईडन गार्डन में उसे मृत्यु से बचाया गया था। जब वह गिरा, तो वह सुरक्षा हटा दी गई, और उसे परिणाम भुगतने पड़े क्योंकि उसकी प्रकृति को अपने तरीके से चलने दिया गया था।

इसलिए, यह कहना बेहतर होगा कि पाप मृत्यु का कारण है, न कि इसके विपरीत, जैसा कि अधिकांश पूर्वी पादरियों ने स्पष्ट रूप से दावा किया है। प्राचीन समय में इस दृष्टिकोण की मुख्य चुनौती, और यहाँ हम मूल पाप के विचारों पर पहुँच रहे हैं, हिप्पो के ऑगस्टीन की कलम से आई, जिन्हें पेलागियस की शिक्षा के कारण इस पर अपना ध्यान केंद्रित करने के लिए मजबूर होना पड़ा, जो एक ब्रिटिश भिक्षु थे, जो वर्ष 418 के आसपास रोम में अपना नाम बना रहे थे। ऐसा लगता है कि पेलागियस ऊपर उल्लिखित पाप के पूर्वी सिद्धांत के समान ही कुछ सिखा रहे थे।

अपने पूर्वी समकक्षों की तरह, पेलागियस ने इस विचार को स्वीकार करने से इनकार कर दिया कि विरासत में मिली अपराध जैसी कोई चीज़ हो सकती है। हालाँकि, ऐसा लगता है कि वह उनसे भी आगे निकल गया था, उसने इस बात से इनकार किया कि विरासत में मिली कोई भी पापपूर्णता होती है। इस बिंदु पर 'हांफना' डालें।

वह स्पष्ट रूप से नश्वरता की विरासत को नकार नहीं सकता था, लेकिन ऐसा लगता है कि उसने इसे पाप से इस हद तक अलग कर दिया था कि अच्छे इरादों वाले किसी व्यक्ति के लिए अपने प्रयासों से खुद को बचाना संभव था। यही कारण है कि पेलागियनवाद का नाम खराब है। अपने आर्मिनियन दोस्त को पेलागियन न कहें।

यह बहुत निर्दयी और गलत है। इसके जवाब में, ऑगस्टीन ने कई तीखे ग्रंथ लिखे, जिसमें उन्होंने मोक्ष के लिए ईश्वर की कृपा की आवश्यकता को बढ़ावा दिया और इस बात से इनकार किया कि इसके बिना कोई भी ईश्वर तक पहुँच सकता है। पश्चिमी चर्च द्वारा पेलागियनवाद की उचित निंदा की गई, लेकिन इसका प्रभाव मजबूत रहा।

और यहां तक कि प्रोटेस्टेंट सुधारकों ने भी सोचा कि यह उन मुख्य बाधाओं में से एक है जिन्हें उन्हें सुसमाचार के प्रचार में पार करना था। इसलिए लूथर ने अपने कैथोलिक विरोधियों को पेलागियन कहा। इसे ऑग्सबर्ग कन्फेशन से देखा जा सकता है, जो एक प्राथमिक लूथरन प्रतीक है, जिसे 1530 में प्रोटेस्टेंट सिद्धांत के पहले प्रमुख कथन के रूप में तैयार किया गया था।

इसमें कहा गया है, उद्धरण, हम पेलागियन और अन्य लोगों की निंदा करते हैं जो इस बात से इनकार करते हैं कि मूल दोष पाप है और मसीह के गुणों और लाभों की महिमा को नष्ट करने के लिए, तर्क देते हैं कि मनुष्य को अपने स्वयं के तर्क की शक्ति से ईश्वर के सामने धर्मी घोषित किया जा सकता है, उद्धरण समाप्त करें। पेलागियस के खिलाफ संघर्ष ने पश्चिमी चर्च में पाप और अनुग्रह के सवालों को एक नई धार दी और इसे इस बात पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर किया कि पाप क्या था और ईसाई के जीवन में इससे कैसे निपटा जाना चाहिए। विशेष रूप से, इसने बाद के पश्चिमी ईसाई धर्मशास्त्रियों को, सबसे ऊपर, जिनमें से लगभग सभी, क्षमा करें, खुद को ऑगस्टीन के बाद के दिनों के प्रतिपादकों के रूप में देखते थे, यह देखने के लिए मजबूर किया कि कुछ अर्थों में, कम से कम, पाप अपने आप में एक चीज थी और केवल अच्छाई की अनुपस्थिति नहीं थी जैसा कि पूर्वी चर्चों ने सिखाया था।

मूल पाप, पेलागियनवाद, आर्मिनियनवाद और केल्विनवाद के विचारों के अलग-अलग उपसमूह हैं। पेलागियनवाद, अमरता से नहीं, बल्कि अनैतिकता से नाराज था, 4वीं सदी के अंत और 5वीं सदी की शुरुआत में अनैतिकता से नाराज, ब्रिटिश भिक्षु पेलागियस ने ईसाई होने का दावा करने वालों को ईश्वरीय जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित किया। ईश्वरीयता को बढ़ावा देने के लिए, उन्होंने मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा पर ज़ोर दिया।

मनुष्य को इच्छा की स्वतंत्रता के साथ बनाया गया था, और आदम के पतन ने उसमें कोई बदलाव नहीं किया है। पेलागियस एक सृष्टिवादी थे, याद रखें, आपको अपनी आत्मा अपने माता-पिता से मिलती है; सृष्टिवाद, भगवान किसी इंसान की माँ के गर्भ में गर्भधारण के समय आत्मा का निर्माण करते हैं। पेलागियस एक सृष्टिवादी थे, जिनका मानना था कि प्रत्येक मानव आत्मा ईश्वर की एक विशेष रचना है, जो भ्रष्टाचार या अपराध से कलंकित नहीं है।

आदम के पाप का असर उसके वंशजों पर पड़ा क्योंकि पहले आदमी ने एक बुरा उदाहरण पेश किया। यह वाकई पाप के बारे में एक कमज़ोर नज़रिया है। बच्चे जन्म से पापी नहीं होते, लेकिन बुरी आदतें विकसित करके पापी जीवनशैली की ओर प्रवृत्त हो सकते हैं।

यह आश्चर्यजनक है कि कैसे वे सभी बच्चे बुरे उदाहरणों का अनुसरण करते हैं। वास्तव में, पेलागियस ने कुछ बाइबिल के पात्रों का हवाला दिया, विशेष रूप से वे जिनके बारे में केवल कुछ

छंद हैं, ऐसे लोगों के उदाहरण के रूप में जिन्होंने कभी पाप नहीं किया। हनोक? मैं नूह का हवाला नहीं दूंगा लेकिन मुझे विश्वास है कि उसने ऐसा किया था।

शायद अय्यूब? यह कोई बुद्धिमानी भरा कदम नहीं है। ऐसा लगता है कि बुरे उदाहरणों का अनुसरण करना सार्वभौमिक है। आप इसका क्या कारण बताते हैं? मनुष्य के उद्धार के लिए परमेश्वर के किसी विशेष अनुग्रह की आवश्यकता नहीं है।

क्या उन्होंने बाइबल में अनुग्रह नहीं देखा? हाँ, जरूर देखा। और यहाँ बताया गया है कि उन्होंने इसे कैसे परिभाषित किया। अनुग्रह कानून था, यीशु का उदाहरण था, और मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा थी।

मेरे दोस्तों, ये चीज़ें अनुग्रह नहीं हैं। अरे! अनुग्रह ईश्वर का बाहरी प्रेम और शक्ति है जो हमें बदलता है, बचाता है, और हमारे लिए वो करता है जो हम अपने लिए नहीं कर सकते। मनुष्य को बचाने के लिए ईश्वर के किसी विशेष अनुग्रह की आवश्यकता नहीं है।

हर किसी के पास कानून है। खैर, हर कोई नहीं, लेकिन जिन लोगों के पास कानून है, उनके पास कानून है, उदाहरण के लिए, यीशु, और हर किसी के पास स्वतंत्र इच्छा है, जिसे उन्होंने स्वतंत्रतावादी स्वतंत्रता के रूप में समझा, जिसमें ईश्वर को चुनने की नैतिक स्वतंत्रता भी शामिल है। हर कोई अपने आप में ईश्वर की आज्ञाओं को पूरा करने और उसके सामने अपनी धार्मिक स्थिति को बनाए रखने में सक्षम है।

मैं अंत में यही कहूंगा, हालांकि आदम एक बुरा उदाहरण था, लेकिन यह मूल पाप का कोई दृष्टिकोण नहीं है क्योंकि हमें आदम से उसके बुरे उदाहरण के अलावा कुछ भी नहीं मिलता है। ओह! फिर से, मैं यही कहूंगा, अपने दोस्तों को पेलागियन मत कहो। लूथर को कभी भी चतुराई के लिए नहीं जाना जाता था।

उन्हें शायद उन्हें अर्ध-ऑगस्टीनियन कहना चाहिए था, अर्ध-पेलाजियन भी नहीं, लेकिन यह एक और मामला है। वास्तव में, इस पर आना अच्छा हो सकता है। आर्मिनियनवाद।

यहाँ, हम जेम्स आर्मिनियस के मूल पाप के सिद्धांत के विवरण से चिंतित नहीं हैं। बल्कि, हम उनके धार्मिक उत्तराधिकारियों के विचार जानना चाहते हैं। गुड न्यूज़ मूवमेंट द्वारा एक टास्क फोर्स का गठन किया गया था, जो यूनाइटेड मेथोडिस्ट चर्च के मेथोडिस्टों का एक रूढ़िवादी समूह था, ताकि समकालीन रूढ़िवादी वेस्लेयन धर्मशास्त्र का एक बयान तैयार किया जा सके।

परिणामस्वरूप विश्वास का कथन जुनालुस्का प्रतिज्ञान के नाम से जाना जाता है, उत्तरी कैरोलिना में इसी नाम की झील के नाम पर, जुनालुस्का, जहाँ 1975 में इस कथन को अपनाया गया था। पॉल ए. मिकी, एक प्रसिद्ध मेथोडिस्ट धर्मशास्त्री, ने जुनालुस्का प्रतिज्ञान पर एक टिप्पणी लिखी है, जिसका नाम है वेस्लेयन धर्मशास्त्र के आवश्यक तत्व, जॉर्डरवन, 1980। मैं जुनालुस्का प्रतिज्ञान और मिकी की टिप्पणी का उपयोग आर्मिनियाई स्थिति को निष्पक्ष और सटीक रूप से प्रस्तुत करने के लिए आधार के रूप में करूँगा।

रूढ़िवादी आर्मीनियाई स्थिति मानव जाति के भ्रष्टाचार की पुष्टि करती है। " आदम के पतन के बाद से, पाप का भ्रष्टाचार हर व्यक्ति में व्याप्त हो गया है और सामाजिक रिश्तों, सामाजिक प्रणालियों और पूरी सृष्टि में फैल गया है।"

जुनालुस्का पुष्टि। इसके अलावा, तो वे पेलागियन नहीं हैं, है न? एडम केवल एक बुरा उदाहरण नहीं है। भ्रष्टाचार।

उन्होंने अपराध नहीं, बल्कि भ्रष्टाचार कहा। इसके अलावा, हमारे आर्मीनियाई भाई-बहन सिखाते हैं कि यह भ्रष्टाचार, रूढ़िवादी आर्मीनियाई भाई-बहन सिखाते हैं, भ्रष्टाचार पापी की स्थिति, ईश्वर के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया को असंभव बना देता है। "यह भ्रष्टाचार इतना व्यापक है कि हम ईश्वर के छुटकारे के प्रस्ताव के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया देने में सक्षम नहीं हैं।" अक्षमता। एक पल रुकिए।

मैथोडिस्ट अक्षमता सिखाते हैं? अपनी सीटबेल्ट को पकड़ें। आप देखेंगे। इस कारण से, लोगों को बचाने के लिए पवित्र आत्मा का दोषी ठहराने वाला कार्य आवश्यक है। उद्धारण, सिवाय भगवान की पूर्वगामी या तैयारी करने वाली कृपा के।

उद्धारण समाप्त। मिकी आगे बताते हैं कि केवल आत्मा का कार्य ही लोगों को बचाने में सक्षम बनाता है। परंपरागत रूप से, आर्मीनियन मानते हैं कि ईश्वर की यह तैयारी करने वाली कृपा सार्वभौमिक है।

यह सभी लोगों को समान रूप से उद्धार की संभावना प्रदान करता है। यह सबसे अच्छा इंजील आर्मीनियनवाद है। सार्वभौमिक पूर्वगामी अनुग्रह की यह धारणा वास्तव में आर्मीनियस से जुड़ी है।

उन्होंने इसे ऐसा नहीं कहा। और वेस्ले, जिन्होंने इसे ऐसा कहा, वास्तव में एक शानदार कदम है।

क्योंकि आदम से पापी पापी ही पैदा होते हैं और खुद को बचाने में असमर्थ होते हैं। सार्वभौमिक पूर्वगामी को छोड़कर, जो पहले से आ रहा है, ईश्वर की कृपा तैयार कर रहा है, जो सभी लोगों को, संभवतः जन्म के समय शिशुओं को, विश्वास करने में सक्षम बनाता है। यह एक क्षेत्र में मूल पाप के प्रभावों को कम करता है।

वे जन्मजात पापी हैं, लेकिन यह उन्हें विश्वास करने में सक्षम बनाता है। यह कोई कार्य धर्मशास्त्र नहीं है। यह अनुग्रह विश्वास धर्मशास्त्र है।

सवाल यह उठता है कि क्या बाइबल अनुग्रह के बारे में यही सिखाती है? बहुत सम्मान के साथ, मेरे पूर्व छात्र ब्रायन की ओर से भी, जिन्होंने वेस्लेयन परंपरा में प्रीवेनिेंट अनुग्रह पर किताब लिखी है। ब्रायन शेल्टन। धन्यवाद, प्रभु।

ब्रायन शेल्टन ईश्वर के एक प्यारे आदमी थे। वह वास्तव में एक सुधारित इंजील सेमिनरी में मेरे छात्र थे।

उसे श्रेय दो। उसने मेरे साथ पूर्वनियति पर एक स्वतंत्र अध्ययन किया और फिर भी आश्चर्य नहीं हुआ। हम एक दूसरे से प्यार करते हैं।

सच तो यह है कि मैंने उनसे कहा था कि उन्हें प्रीवेनिंट ग्रेस पर एक किताब लिखनी चाहिए, और उन्होंने ऐसा किया भी। और अपने समर्पण में उन्होंने इसे दो लोगों को समर्पित किया, और मैं उनमें से एक था। मेरे प्रोफेसर, पूर्व इरा पीटरसन को, जिन्होंने मेरी परवाह की, मुझे पढ़ाया, और मुझसे असहमत थे।

और इस किताब को लिखने में मेरा साथ दिया। कुछ ऐसा ही। वह एक प्यारा भाई है।

वह बाइबल पर विश्वास करने वाला एक ईसाई है जो प्रभु से प्रेम करता है। और उसकी किताब को लिखे जाने की ज़रूरत थी। लेखन और संगठन की स्पष्टता के अलावा इसमें कुछ वास्तविक खूबियाँ भी हैं।

यह ऐतिहासिक धर्मशास्त्र में मजबूत है। जहाँ मुझे यह कमज़ोर लगता है वह है बाइबल। यह सार्वभौमिक पूर्ववर्ती अनुग्रह की इस धारणा के व्याख्यात्मक आधारों में है।

मैं नहीं मानता कि बाइबल यह सिखाती है। वैसे, मेरे कई कैल्विनिस्ट दोस्त यह नहीं समझते कि जॉन वेस्ले ने प्रीवेनिंट ग्रेस शब्द का आविष्कार नहीं किया था। संत ऑगस्टीन ने किया था, या मुझे नहीं पता कि उन्हें यह कहाँ से मिला।

लेकिन संत ऑगस्टीन ने इसका इस्तेमाल किया। और संत ऑगस्टीन के लिए, ईश्वर की कृपा निश्चित रूप से मोक्ष से पहले आती है। लेकिन यह सार्वभौमिक नहीं है।

और यह हमें केवल उस स्थिति में वापस नहीं ले जाता, जहाँ हम ईश्वर को चुन सकते हैं। संत ऑगस्टीन के लिए, यह प्रभावकारी और विशिष्ट है। ईश्वर इसे केवल अपने चुने हुए लोगों को देता है, जिन्हें वह आत्मा के द्वारा अपने पास खींचता है।

इसलिए, हालाँकि आर्मिनियनवाद में असमर्थता की तकनीकी शिक्षा है, व्यावहारिक रूप से, वे ऐसा नहीं करते हैं। अब फिर से, यह सबसे अच्छा है। सबसे बुरा पाप के प्रभावों को इतना बुरा नहीं मानता।

कमतर आर्मिनियनवाद सार्वभौमिक पूर्वगामी अनुग्रह को नहीं मानते। मुझे इसकी कोई आवश्यकता नहीं दिखती। मैं क्लार्क पिनाक और प्रसिद्ध ईसाई धर्मोपदेशक, जिन्होंने पुस्तक, चुना हुआ लेकिन लिखी है, दोनों को देखकर निराश हुआ।

नॉर्म गीस्लर। ये ईश्वर के लोग हैं। मैं उनका सम्मान करता हूँ।

नॉर्म गीस्लर और क्लार्क पिनाक इस सार्वभौमिक निवारक अनुग्रह की शिक्षा नहीं देते हैं। गीस्लर ने अपनी पुस्तक चुना हुआ लेकिन स्वतंत्र में, जेम्स व्हाइट की प्रतिक्रिया पुस्तक, द पॉटर्स फ्रीडम

देखें, कहा है, हाँ, हम पाप से अपंग हैं, लेकिन हम आध्यात्मिक रूप से मरे नहीं हैं। या इफिसियों 2, 1-3 में आध्यात्मिक मृत्यु का यही अर्थ है।

ओह, मेरे शब्द। मैं उस आदमी से प्यार करता हूँ, उसके क्षमाप्रार्थी मंत्रालय का सम्मान करता हूँ, लेकिन लड़के, क्या मैं उस व्यवसाय से असहमत हूँ। परंपरागत रूप से, आर्मिनियन ने इस पूर्ववर्ती अनुग्रह को धारण किया है।

अनुग्रह जो पहले आता है, अनुग्रह तैयार करता है। अनुग्रह जो एक क्षेत्र में मूल पाप के प्रभावों को समाप्त करता है, वह है मानवीय इच्छा। यह बंधा हुआ था, अब यह मुक्त है।

वेस्ले ने खुद एक धार्मिक ग्रंथ लिखा था। उन्होंने बहुत कुछ लिखा था। और वह मूल पाप पर था।

यह उनके धर्मशास्त्र की प्रणाली के लिए कितना महत्वपूर्ण था। सार्वभौमिक पूर्वगामी अनुग्रह एक प्रतिभाशाली कदम है। यह वह गोंद है जो इंजील आर्मिनियन उद्धारशास्त्र को एक साथ रखता है।

लेकिन मुझे खेद है, यह बाइबिल से संबंधित नहीं है। पहली नज़र में, विरासत में मिली भ्रष्टाचार की आर्मिनियन स्थिति तत्काल आरोपण के कैल्विनिस्ट दृष्टिकोण के करीब लगती है, जिसे मैंने अभी तक परिभाषित नहीं किया है। यह शुरुआत में समान है, फिर भी मूल पाप के आर्मिनियन और कैल्विनिस्ट सिद्धांत अलग-अलग निष्कर्षों पर पहुंचते हैं।

एरिक्सन कहते हैं कि आर्मिनियन मानते हैं कि आदम के पाप के कारण हम पर जो भी दोष और निंदा आई है, उसे पूर्ववर्ती अनुग्रह के माध्यम से हटा दिया गया है। वे अपने प्रसिद्ध धर्मशास्त्रियों में से एक ऑर्टन वाइली को उद्धृत करते हैं। "मनुष्य अब अपने स्वभाव की भ्रष्टाचार के लिए दोषी नहीं है, हालाँकि वह भ्रष्टाचार पाप का सार है। हम कहते हैं कि इसकी दोषीता, मसीह के मुफ्त उपहार द्वारा हटा दी गई थी।" एरिक्सन फिर वाइली के विचारों का सारांश देते हैं।

उद्धरण: यह पूर्वगामी अनुग्रह सभी को दिया जाता है और, वास्तव में, आदम से प्राप्त भ्रष्टाचार को बेअसर करता है। मैं इसका प्रतिवाद करूंगा, मैं इसे योग्य बनाऊंगा, विशेष रूप से यह इच्छा को मुक्त करता है। विले के *ईसाई धर्मशास्त्र से*, खंड 2, पृष्ठ 121 से 128 तक।

हमारे अगले व्याख्यान में, हम कैल्विनिस्ट विचारों, पेलागियनवाद, आर्मिनियनवाद और कैल्विनिस्ट विचारों के मामले को उठाएंगे, और उसके बाद, हम एक-एक करके उनका मूल्यांकन करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा मानवता और पाप के सिद्धांतों पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 17 है, मूल पाप, साहित्यिक चोरी और आर्मिनियनवाद।